पेश लफ़्ज़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल्हम्दुलिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाहि (ﷺ)

ऐ मुस्लिम बहन! सुन, ये दास्तान एक ऐसी औरत की है जिसे अल्लाह तआला ने बहुत सारी ख़ूबियाँ अता कर रखी थी। उसकी चन्द ख़ूबियों पर आप भी ग़ौर कीजिये,

वो एक मुत्तक़ी, नेक, सालेहा, हमेशा ख़ैर की बात करने वाली औरत थी। अल्लाह के ज़िक्र से कभी ग़ाफ़िल न रहने वाली, कोई फ़िज़ूल बात ज़बान से न निकालने वाली, जहन्नम का कभी ज़िक्र आ जाये तो उसकी सख़्तियों को ध्यान में रखते हुए अल्लाह की बारगाह में आजिज़ी व इंकिसारी के साथ हाथ उठाकर उससे पनाह मांगने वाली, जब जन्नत का ज़िक्र आये तो उसे हासिल करने के शौक़ में हाथ फैला कर गिड़गिड़ाते हुए उसका हक़दार बनने की अल्लाह से इल्तिजा करने वाली। वो एक ऐसी औरत थी, जो कि लोगों से मुहब्बत व उल्फ़त रखने वाली थी और लोग भी उससे मुहब्बत व उल्फ़त रखते थे।

अचानक एक दिन वो अपनी रान में शदीद (तेज़) दर्द महसूस करने लगी। इलाज के तौर पर घरेलू इलाज और गर्म पानी से सेक वग़ैरह के तरीक़े इस्ते'माल किये गये लेकिन उसके

बातचीत के एहतियात

01. फ़िज़ूल और ज़्यादा बातें करने से बचना :

कुर्आन मज़ीद का इर्शाद, **'लोगों की ख़ुफ़िया सरगोशियों में अक्षर व बेशतर कोई भलाई नहीं होती। हाँ अगर कोई पोशीदा तौर पर सदक़ा व ख़ैरात करे या किसी नेक काम की तल्क़ीन करे या लोगों में सुलह कराने के लिये (मश्वरा वग़ैरह कर ले)।'** (सूरह निसा : 114)

ऐ मुस्लिम बहन! आपको इल्म होना चाहिये कि आपकी हर बात को लिखने वाले और उसे नोट करने वाले हर वक़्त मौजूद हैं, अल्लाह तआला का फ़र्मान है :

'एक दायें तरफ़ और एक बायें तरफ़ बैठा हुआ है। तुम जो बात भी मुँह से निकालते हो, उस पर निगराँ मौजूद है।' (सूरह क़ाफ़ : 17-18)

इसलिये बेहतर है कि आप जो बात करें बड़ी मुख़्तसर (छोटी), बा-मआनी (सार्थक) और बा-मक़सद हो और जो बात मुँह से निकालें सोच-समझ कर निकालें।

02. कुर्आन करीम की तिलावत करना :

कोशिश ये हो कि हर रोज़ कुर्आन की तिलावत की जाये, कुर्आन पढ़ना आपका रोज़ाना का मा'मूल बन जाना चाहिये। ये भी कोशिश करें कि जितना हो सके उतना ज़बानी हिफ़्ज़ किया जाये ताकि क़यामत के रोज़ अज्रे अ़ज़ीम, आला दर्जात और बेहतरीन

करने के काम

35. अल्लाह की क़ुर्बत ह़ासिल करना :

ऐ मेरी बहन! फ़राइज़, नवाफ़िल और ज़िक्रे इलाही और नेकी की दा'वत दे कर अल्लाह की क़ुर्बत (निकटता) ह़ासिल करने की जद्दोजहद में लगी रहो। इंशाअल्लाह! ऐसा करने से आप अल्लाह के यहाँ अज्रे अ़ज़ीम, ष़वाबे कष़ीर (बहुत ज़्यादा ष़वाब) और आ़ला दर्जात से नवाज़ी जाएंगी। अल्लाह करीम आपको अपनी ऐसे नेक बन्दियों की स़फ़ (लाइन) में शामिल करेगा जिनको न इस दुनिया में किसी का ख़ौफ़ होगा और न आख़िरत में कोई परेशानी होगी। अल्लाह जिसकी चाहे उसकी दुआऐं क़ुबूल करता है, उसकी परेशानियों और ग़मों को दूर करता है और उनके दिल इत्मीनान व सुकून और राह़त से भर देता है।

प्यारे रसूल (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, **'अल्लाह ख़ालिक़े कायनात का फ़र्मान है कि जिसने मेरे किसी वली से दुश्मनी की उसे मेरी त़रफ़ से ऐलाने जंग है और मेरा बन्दा जिन-जिन इबादतों से मेरा क़ुर्ब ह़ासिल करता है और कोई इबादत मुझको उससे ज़्यादा पसंद नहीं है जो मैंने उस पर फ़र्ज़ की है (या'नी फ़राइज़ मुझको बहुत पसंद हैं जैसे नमाज़, रोज़ा, ह़ज्ज, ज़कात) और मेरा बन्दा फ़र्ज़ अदा करने के बाद नफ़्ल इबादतें करके मुझसे इतना नज़दीक हो जाता है कि मैं उससे मुह़ब्बत करने लग जाता हूँ। फिर जब मैं उससे मुह़ब्बत करने लग जाता हूँ तो मैं उसका कान बन जाता हूँ जिससे वो सुनता है, उसकी आँख बन जाता हूँ जिससे वो देखता है, उसका हाथ बन जाता हूँ जिससे वो पकड़ता है, उसका पाँव बन जाता हूँ**